

पद २७४

(रागः झिंजोटी – तालः धुमाळी)

मैं वारुं सैय्या तोहे परसे ॥ध्रु॥ तोरा मुख देखन आई रे कन्हैया ।
दौरत दौरत पियाघरसे ॥१॥ सांवरी सूरत रसभर अखियाँ । लेऊं
बलैया दो करसे ॥२॥ मानिकके प्रभु ये नंदलाला । दरसन बिन
जियारा तरसे ॥३॥